6. पद्माकर

कवि परिचय –

पद्माकर रीतिकाल के प्रमुख कवि हैं। इनका जन्म 1753 ई. में बाँदा (उ.प्र.) में हुआ था। इनका वास्तविक नाम 'प्यारेलाल' था। इनके पिता का नाम मोहनलाल भट्ट था। ये बचपन से ही प्रखर बुद्धि वाले थे। ये सोलह वर्ष की अल्पायु में ही सरस और भावपूर्ण छंदों की रचना करने लगे थे। इन्होंने सागर नरेश 'अप्पासाहब' को एक छंद सुनाया था, जिस पर प्रसन्न होकर श्री रघुनाथराव ने इन्हें एक लाख मुद्रा पुरस्कार स्वरूप दी। ये अर्जुन सिंह, हिम्मत बहादुर, जयपुर नरेश, महाराणा भीमसेन (उदयपुर) नरेश दौलतराव (ग्वालियर) आदि देश के कई राजाओं के आश्रित कवि रहे। इनका देहावसान 1833 ई. में कानपुर में हुआ।

प्रतिभावान् होने के साथ-साथ ये अत्यंत स्वछंद प्रकृति के थे। ये जयपुर में राजसी ठाट-बाट से कई वर्षों तक रहे। वे यात्रा पर पूरे लाव-लश्कर के साथ निकलते थे। एक बार एक नरेश को भ्रम हो गया कि कहीं कोई दूसरा नरेश आक्रमण के लिए तो नहीं आ रहा है। पद्माकर द्वारा रचित ग्रंथों में 'हिम्मत बहादुर विरुदावली', 'पद्माभरण', 'जगद्विनोद', 'प्रबोध पचीसी', 'गंगा लहरी' 'रामरसायन' और 'आलीजा प्रकाश' प्रमुख हैं।

पद्माकर की भाषा अत्यंत परिष्कृत है। इसमें कहीं–कहीं पर अवधी, ब्रज और बुन्देलखण्डी का मिश्रण भी है। इनकी कविताओं में मधुरता है। इनकी रचनाएँ हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि हैं।

पाठ-परिचय –

प्रस्तुत पाठ में गंगा की स्तुति प्रस्तुत की गई है। संकलित पदों में गंगा की निर्मलता और पतितों के उद्धार करने की क्षमता का वर्णन किया गया है। कवि ने कहा है कि भगवान महादेव की जटा से निकली गंगा ने लाखों लोगों का उद्धार किया है। गंगा तो ऐसी है कि वह बिना माँगे ही सब-कुछ दे देती है। वह कामधेनु है। उन्होंने कहा है कि गंगा धर्म का मूल है और इसके जल का पान करना चाहिए।

गंगा स्तुति

विधि के कमंडल की सिद्धि है प्रसिद्ध यही,
हरि-पद पंकज-प्रताप की लहर है।
कहैं 'पदमाकर' गिरीस-सीस मंडल के,
मंडल की माल ततकाल अघहर है।
भूपति भगीरथ के रथ की सुपुण्य पथ,
जन्हु जप जोग फल फैल की फहर है।
छेम की छहर गंगा रावरी लहर,
कलिकाल को कहर जमजाल को जहर है।।1।।
जमपुर द्वारे लगे तिन में केवारे, कोऊ
हैं न रखवारे ऐसे बन के ऊजारे हैं।

कहै 'पदमाकर' तिहारे प्रन धारे तेउ,
करि अब भारे सुरलोक को सिधारे हैं।।
सुजन सुखारे करे पुन्य उजियारे अति,
पतित-कतारे भवसिंधु ते उतारे हैं।
काहू ने न तारे तिन्हैं गंगा तुम तारे, और
जेते तुम तारे तेते नभ में न तारे हैं।।2।।

कूरम पै कोल कोलहू पै सेस कुंडली है,
कुंडली पै फबो फैल सुफन हजार की।
कहै 'पदमाकर' त्यों फन पै फवी है भूमि,
भूमि पै फबी है थिति रजत पहार की।।
रजत पहार पर संभु सुरनायक हैं,
संभु पर ज्योति जटा-जूट है अपार की।
संभु जटा-जूटन पै चंद की छुटी है छटा,
चंद की छटान पै छटा है गंगधार की।।3।।

कैंधो तिहुँ लोक की सिंगार की बिसाल माल,
कैंधौं जगी जग में जमाति तीरथन की।
कहै 'पदमाकर' बिराजै सुर-सिंधु-धार,
कैंधों दूध धार कामधेनु के घनन की।
भूपति भगीरथ के जस को जलूस कैंधौं,
प्रगटी तपस्या कैंधौं पूरी जन्हु-जनकी।
कैंधौं कछु राखै राका-पति सों इलाका भारी,
भूमि की सलाका की पताका पुन्यगन की।।4।।

करम को मूल तन, तन मूल जीव जग,
जीवन को मूल अति आनन्द ही धारिबो।
कहै 'पदमाकर' ज्यौं आनन्द को मूल राज,
राजमूल केवल प्रजा को भौन भरिबो।
प्रजामूल अन्न सव, अन्नन को मूल मेघ,
मेघन को मूल एक जज्ञ अनुसरिबो।
जज्ञन को मूल धन, धन मूल धर्म अरु,

धर्म मूल गंगा–जल बिन्दु पान करिबो।।5।।

शब्दार्थ –

विधि–ब्रह्मा/ प्रसिद्ध–ख्याति प्राप्त/गिरीस–शिव/ अघहर–पाप को नष्ट करने वाली/ जन्हु–जन्हु ऋषि/ रावरी–आपकी/ कहर–कठोर/ जमजाल–यमराज का जाल/ जमपुर–यमपुर/ केवारे–किवाड़/ सुरलोक–स्वर्ग/ कतारे–पंक्ति/ कूरम–कछुआ/ कोल–सुअर/ कोलहू–वराह/ सेस–शेषनाग/ रजत पहार–कैलाश पर्वत/ संभु–भगवान शिव/ गंगधार–गंगा की धारा/ कैंधो–अथवा/ सिंगार–शृंगार/ जलूस–समूह, उत्सव/ राका पति–चंद्रमा।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. पद्माकर का जन्म कहाँ हुआ था ?

   (क) बाँदा (ख) जयपुर

   (ग) सागर (घ) उदयपुर ( )

2. पद्माकर का वास्तविक नाम क्या था ?

   (क) नटवरलाल (ख) प्यारेलाल

   (ग) लल्लूलाल (घ) मोहनलाल ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. पद्माकर का जन्म कब हुआ ?
2. पद्माकर के पिता का क्या नाम था ?
3. पद्माकर का देहावसान कहाँ हुआ ?
4. किस राजा ने पद्माकर को एक लाख मुद्राएँ पुरस्कार में दीं ?
5. गंगा की धारा कहाँ से निकली है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. पद्माकर किन-किन राजाओं के आश्रय में रहे ?
2. पद्माकर की कृतियों के नाम लिखिए।
3. ''भूपति भगीरथ के रथ की सुपुण्य पथ'' पंक्ति का भावार्थ लिखिए।
4. पद्माकर के काव्य की विशेषताएँ बताइए।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. प्रस्तुत पाठ के आधार पर गंगा की महत्ता का वर्णन कीजिए।
2. पद्माकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में एक लेख लिखिए।
3. पाठ में आए निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

   (क) ''विधि के कमंडल की.....कहर जमजाल को जहर है।।''

   (ख) ''कूरम पै कोल कोलहू..... छटा है गंगधार की।।''

•••